यू.जी.सी. के अर्थिक सहयोग द्वारा प्रकाशित

भारतीय भाषाएँ व प्रवासी साहित्य

सम्पादक : प्रो. शीला मिश्र

प्रकाशक
मिलिन्द प्रकाशन
4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग
हनुमान व्यायाम शाला की गली
सुल्तान बाज़ार
हैदराबाद - 500 095
फोन : 040-24753737

आवरण एवं साज सज्जा
वी'डिजाइन, हैदराबाद
मो. : 098855 06088

प्रथम संस्करण
सितम्बर, 2016

मूल्य
₹ 900/-
रुपये नौ सौ

ISBN : 81-86907-85-7

BHARTIYA BHASHAYEN VA PRAVASI SAHITYA Editor PROF. SHEELA MISHR

संपादक की ओर से....

उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद के शतवर्षीय उत्सव के शुभावसर पर हिंदी विभाग द्वारा आयोजित दो-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 'भारतीय भाषाएँ व प्रवासी साहित्य' पर प्रकाशित यह शोध-लेखों का संकलन आपके हाथों सौंपते हुए गहरे संतोष का अनुभव हो रहा है। संतोष होने के कई कारण हैं। पहला तो संगोष्ठी के संयोजक होने के नाते ढेरों विद्वानों ने अपने शोध-लेख द्वारा इस ग्रंथ को समृद्ध कर मुझे उपकृत किया है जिससे कि यह कार्य तमाम-सीमाओं को पार करने के बाद समय से पूरा कर पा रही हूँ। दूसरा हिंदी प्रोफेसर व प्रेमी होने के नाते अपने हिंदी-ऋण को किसी हद तक चुकता भी कर पा रही हूँ।

. उस्मानिया विश्वविद्यालय व अंतर्राष्ट्रीय साहित्य कला मंच के पदाधिकारियों व प्रकाशन से जुड़ी परामर्श समिति के साथी सदस्यों की सहमति से इस ग्रंथ की योजना यूँ बनाई गई जिससे भारतीय भाषाओं की दशा और दिशा से लेकर प्रवासी हिंदी साहित्य व हिंदी से जुड़े महत्वपूर्ण पहलू पर चर्चा हों और इस चर्चा में हिंदी के प्राध्यापक, चिंतक, शोधार्थी व विद्यार्थी को शामिल किया जाए। विशेष रूप से यह जाँचा-परखा जाए की आधुनिकता के कारख़ाने में हिंदी भाषा यदि रखा जाए तो कौन-कौन से मंतव्य उभरते हैं। प्रश्न यह भी है कि वैश्विक और राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार व संकुचन पर प्रसन्नता और व्यथा व्यक्त क्यों की जाए? बहुत से प्रश्न थे और जिज्ञासाएँ भी थीं। विषय असीमित था और मेरे पास संसाधन सीमित। अत: यह सोचा गया की ग्रंथ का उद्देश्य हिंदी की राजनीतिक-सांस्कृतिक ज़मीन और उससे पैदा होने वाली बहसों के बारे में हो। लेखक यह बताने का आग्रह करें कि वर्तमान में वह हिंदी के विषय-बिंदु पर क्या चिंतन करते हैं। मेरा उद्देश्य था कि हिंदी को लेकर हमारे देश व विदेश में जो नए समीकरण उभर रहे हैं, उन पर दो दिन चर्चा हों तथा सभी वैश्विक हिंदी सेवियों को सहज परिचय मिल सकें कि

Scanned with CamScanner

प्रवासी हिन्दी साहित्य : वैश्विक परिदृश्य

- डॉ. अफसर उन्निसाँ बेगम

हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य विश्वविख्यात है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित है। हिन्दी की विशेषताओं में से एक है, उसकी देवनागरी लिपि जो पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है जिसे सभी अध्यक्षता सुविधापूर्वक अपना सकते हैं। उसकी दूसरी प्रमुख विशेषता यह है कि हिन्दी भाषा अन्य भाषा शब्दों को अपनाती है जिसके विकास से अन्य भाषाओं का विकास जुड़ता है। हिन्दी भाषा हम भारतीयों की अस्मिता की पहचान है। हिन्दी साहित्य सृजन प्रक्रिया वर्षों से अबाध गति से गतिमान है। समय-समय पर साहित्य में नये आयाम जुड़ते गए। प्रवासी हिन्दी साहित्य भी उन्हीं की धारा में एक नवीनता बन के उभरा है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य ने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। इस साहित्य का पठन कर हम विदेशों के अनेक अनुभवों, विचारों, भावनाओं, संवेदनाओं से अवगत होते हैं।

विदेशों में बसे अनेक भारतीय हिन्दी रचना व विकास के कार्य में लगे हैं। वे हिन्दी को अपने नियमित लेखन व अध्यापन से विदेशों में लोकप्रिय बनाने का काम कर रहे हैं। विदेशों में रहने वाले हिन्दी साहित्यिकार अपनी रचनाओं में अलग-अलग देशों की विभिन्न परिस्थितियों को प्रकट करते रहे हैं, जिस से हिन्दी साहित्य का अंतर्राष्ट्रीय विकास हो रहा है।

10 जनवरी, 2003 ई. वी. को नयी दिल्ली में प्रवासी दिवस मनाया गया और उसी के साथ प्रवासी हिन्दी दिवस मनाने की परंपरा का शुभारंभ हुआ। भारत की केंद्रिय व प्रादेशिक सरकार, व्यक्तिगत संस्थाएँ, वागर्थ तथा भाषा और वर्तमान साहित्य पत्रिकाओं ने प्रवासी विशेषांक प्रकाशित करके प्रवासी रचनाकारों को भारतीय साहित्य की प्रमुख धारा से जोड़ा। इस प्रकार 21वीं शताब्दी में आधुनिक साहित्य के अंतर्गत प्रवासी हिन्दी साहित्य का नया युग आरंभ हुआ।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं और इंटरनेट पर अंकित विवरण के अनुसार आज की तारीख में लगभग 22 मिलियन ऐसे भारतवंशी विश्व के 132 देशों में अपनी जड़े जमा चुके हैं। जिनके लिए हिन्दी उनकी सभ्यता, संस्कृति, पहचान और अस्मिता है। आज विश्व के तकरीबन 160 विश्वविद्यालयों में हिन्दी की विधिगत शिक्षा के साथ शोध-कार्य भी हो रहे हैं। मात्र यू.के. में ही 12 लाख प्रवासी भारतवंशी ब्रिटिश जन-जीवन के महत्त्वपूर्ण अंग बन चुके हैं।

उक्त संदर्भित भारतवंशियों में बहुत से लोग हिन्दी भाषा और साहित्य के सृजन, पठन-पाठन, प्रचार-प्रसार व विस्तार में जुटे हुए हैं। प्रवासी साहित्यकारों के रचनात्मक सृजन की

विशेषता दर्शाते हुए डॉ. उषा राजे सक्सेना का मत दृष्टव्य है - प्रवासी लेखकों के अंदर वैयक्तिक और स्थानीय अनुभवों के संक्रमण की एक लंबी प्रक्रिया चलती है। यह एक विचित्र सृजनात्मक स्थिति होती है जिसमें दो भाषाओं के रूप में दो संस्कृतियों का मिलन होता है।

आरंभिक और वर्तमान प्रवासी हिन्दी साहित्य

आरंभिक प्रवासी साहित्य पहले पहल दास्ता, दु:ख-दर्द, पीड़ा, विवशता का यथार्थ चित्रण मात्र था। क्योंकि भारतीय नागरिक किसी मजबूरी या धोखे से विदेश ले जाए गए थे, उनके साथ वहाँ दुर्व्यवहार किया जाता था उन्हें मानव अधिकार से वंचित जीवन जीना पड़ रहा था ऐसे जीवन में संघर्ष और क्रांति की चाह नहीं तो और क्यों हो सकती थी।

एक समय था जब प्रवासी हिन्दी साहित्य सिर्फ उन लोगों के द्वारा लिखे गए साहित्य को कहते थे जो 175 या 130 वर्ष पूर्व शर्तबंदी के तहत मॉरिशस, फिजी, त्रिनिदाद और सूरीनाम छलावे और भुलावे से ले जाए गए थे। वह गिरमिटिया लेखन असीम यातनाओं, संघर्षों, दास्ताओं और क्रांति की कहानियाँ थी। ये प्रवासी अभाव में थे, विवश थे, निराश थे। इनमें गरिमिटिया क्रांति के सफलता असफलता का इतिहास था।

वर्तमान प्रवासी हिन्दी साहित्य आवश्यकता, स्वेच्छा, उज्ज्वल भविष्य की आशा और विदेशी नागरिकता को इच्छानुसार स्वीकार करने वाले प्रवासी साहित्यकारों का साहित्य है। इन्होंने विदेशी जन जीवन से परिचय बढ़ाया, उसे जाना, समझा, परखा, अनुभव किया, भोगा और स्वदेश की यादों को मन में बसाए, नए देश की जीवन प्रणाली, परिवेश, रीति-रिवाजों, तौर-तरीकों, सिद्धांतों से समझौता करते हुए जीवन की नवीन दिशाएँ खोजी।

सुषम बेदी का हवन उपन्यास, अचला शर्मा का पासपोर्ट और नाटक, मोहन राणा का सुबह की डाक कविता संग्रह आदि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण सिद्ध हुए हैं।

देशानुरूप प्रवासी हिन्दी साहित्य

विविध देशों में रचित प्रवासी हिन्दी साहित्य देशकाल, परिस्थिति, आवश्यकता और अनुभवानुसार भिन्न-भिन्न होगा। एक की संरचना प्रवृत्ति दूसरे से पूरी तरह समान नहीं हो सकती, उसमें अलगाव सहज संभव है। अमेरिका, यूरोप तथा खाड़ी देशों में रचित साहित्य और मॉरिशस, फिजी में सृजित साहित्य के दृष्टिकोण, चिंतन, विषय-वस्तु, भाषायी संस्कृति और द्वंद्व सब भिन्न है। विदेशों में विदेशी भाषा के चलते हिन्दी लेखक विरोधी, नकारात्मक और दिन-प्रतिदिन की जैविक परिस्थितियों में से समय निकाल कर हिन्दी का जो रचनात्मक कार्य कर रहे हैं वह अति प्रशंसनीय व सराहनीय है।

प्रवासी हिन्दी साहित्य और विविध देश

भारतीय प्रवासी साहित्यकार अपनी भाषा और संस्कृति को संपूर्ण विश्व में विस्तीर्ण कर रहे हैं। अनेक देश हिन्दी प्रवासी साहित्य लेखन में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं-

Scanned with CamScanner

गीतकार इंदुकानत शुक्ल, श्री गुलाब खंडेलवाल, डॉ. विजय कुमार मेहता, श्री ओमप्रकाश गौड़ प्रवासी, रामेश्वर अशांत, डॉ. वेदप्रकाश बटुक तथा नई शृंखला में सुधा ओम धींगरा, हिमांशु पाठक, धनंजय कुमार, राकेश खंडेलवाल, सुरेंद्र कुमार तिवारी, अनंत कौर, अंजना संधीर और नरेंद्र सेठी ने प्रवासी हिन्दी कवियों में अपनी विशेष पहचान बनाई है। कथा साहित्य में सोमावीरा, उषा प्रियंवदा, सुषम बेदी, उमेश अग्निहोत्री आदि साहित्यकारों ने लोकप्रियता पाई है, इनके साहित्य को पाठकों ने बहुत पसंद किया है यहाँ साहित्य की समस्त विधाओं का प्रकाशन गतिमान है।

कनाडा और प्रवासी साहित्य

यहाँ भी हिन्दी की स्थिति बेहतर कही जा सकती है। चेतना आदि पत्रिकाओं ने हिन्दी का प्रचार कार्य अच्छा किया है। श्रीनाथ द्विवेदी, समीर लाल, जसवीर कलरवी, डॉ. भूपेंद्र सिंह, हरदेव सोढ़ी, ललित अहलूवालिया, भुवनेश्वरी पांडेय, अमर सिंह जैन और कृष्ण कुमार सैनी हिन्दी साहित्य को अपने योगदान से पुष्ट कर रहे हैं। इन रचनाकारों की 72 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

ब्रिटेन और प्रवासी साहित्य

सन् 1883 ई. वी. में राजा रामपाल सिंह के संपादन में पहला हिन्दी-अंग्रेज़ी त्रैमासिक समाचार-पत्र 'हिन्दोस्थान' प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् 1964 ई.वी. में हिन्दी प्रचार परिषद ने प्रवासिनी पत्रिका का प्रकाशन किया। इसके संपादक धर्मेंद्र गौतम थे और लेखकीय सहयोगियों में थे राधेश्याम सोनी, जगदीश मित्र कौशाल, मोहनगुप्त, बैरागी, सत्यदेव प्रिंजा, विनोद पांडे, कांता पटेल और अबू अब्राहम इत्यादि।

रमेश कुमार ने 1964 ई.वी. से 'मिलाप' वीकली पत्र का संपादन और प्रकाशन किया। जगदीश मित्र कौशल ने 1971 से 'अमरदीप' साप्ताहिक का संपादन और प्रकाशन आरंभ किया। श्री नरेश ने पत्रिका चेतना का संपादन और प्रकाशन किया। 1997 ई.वी. से त्रैमासिक पत्रिका 'पुरवाई' का संपादन व प्रकाशन डॉ. पदमेश गुप्त कर रहे हैं। इस पत्रिका ने ब्रिटेन के रचनाकारों को एक जबरदस्त मंच प्रदान किया। भारतीय उच्चायोग ने भारत भवन का प्रकाशन किया। 2008 ई.वी. में शैल अग्रवाल ने 'लेखनी' नामक मासिक वेब पत्रिका का प्रकाशन किया। यह सभी पत्रिकाओं ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अद्भुत कार्य किए।

साहित्य की अनेक विधाओं में यहाँ ज़ोरों-शोरों से कार्य जारी है। ब्रिटेन के हिन्दी सेवी प्रमुख रचनाकारों में डॉ. सत्येंद्र श्रीवास्तव, उषा राजे सक्सेना, प्राण शर्मा, डॉ. कृष्ण कुमार, तेजेंद्र शर्मा, डॉ. निखिल कौशिक, डॉ. कविता वाचकनवी, मोहन राणा, दिव्या माथुर, डॉ. गौतम सचदेव, डॉ. पद्मेश गुप्त, महेंद्र दवेसर दीपक, रमेश पटेल, भारतेंदु विमल, शैल अग्रवाल, उषा वर्मा, कादम्बरी मेहरा, पुष्पा भार्गव, विद्या भायर, कीर्ति चौधरी, प्रियंवदा मिश्रा, अरुणा संभरवाल,

इंदिरा आनंद, श्रीमती राज मदिगिल, श्रीमती निर्मल परीजा और उर्मिला भारद्वाज के अतिरिक्त अनेकों नाम शामिल हैं।

इस समय ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, यूरोप एवं खाड़ी देशों में स्तरीय हिन्दी साहित्य रचा जा रहा है। कहानी, कविता, रेडियो नाटक, लेख, उपन्यास सभी विधाओं में बेहतरीन रचनाएँ सामने आ रही हैं। पहली बार प्रवासी हिन्दी साहित्य को मुख्यधारा के हिन्दी साहित्य का हिस्सा समझा जाने लगा है।

ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, डेनमार्क, नॉर्वे, सऊदी अरब, शारजा, जापान और यूरोप के अन्य कई देशों में भारतीय प्रवासी फैले हुए हैं, वहाँ के लोग भी भारतीयों और उनकी भाषाओं के प्रति सद्भाव रखते हैं, वहाँ हिन्दी का साहित्यिक भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है। अत: निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों ने भारतीय भाषा, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता को विश्वस्तर तक पहुँचा दिया है।

मैं डॉ. कमल किशोर गोयनका जी के शब्दों से इस प्रपत्र का समान करना चाहूँगी -

हिन्दी के प्रवासी साहित्य की गति और विकास को अब कोई भी विरोधी शक्ति नहीं रोक सकती वह हिन्दी साहित्य की एक सशक्त धारा बन चुकी है और उसे हमें हिन्दी साहित्य की प्रमुख धारा में सम्मानपूर्ण स्थान देना होगा।

एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
मुमताज डिग्री एंड पी.जी. कॉलेज,
मलकपेट, हैदराबाद, तेलंगाना।

सहायक ग्रंथ -

1. द संडे टाइम्स ऑफ़ इंडिया 5 जनवरी, 2003
2. प्रवासी हिन्दी साहित्य, दशा और दिशा - उषा राजे सक्सेना, पृ. 162, 2004
3. वही - पृ. 163, 2004
4. यह प्रवासी हिन्दी का स्वर्णयुग है - आलेख तेजेंद्र शर्मा
5. भूमिका शब्दयोग - डॉ. कमल किशोर गोयनका, अप्रैल 2008

1. प्रवासी हिन्दी साहित्य विकिपीडिया
2. हिन्दी और प्रवासी भारतीय - राकेश बी दुबे

Scanned with CamScanner

पुस्तक में संग्रहीत लेखों से संबंधित विचार, सभी तथ्य, वाद-विवाद के संबंध में लेख के लेखक व लेखिका स्वयं उत्तरदायी हैं, इसके लिए प्रकाशक, प्रधान संपादक या संपादक-मंडल जिम्मेदार नहीं।

प्रकाशक : गीता प्रकाशन
4-2-771/A, प्रथम तल,
रामकोट, हैदराबाद-1.
फ़ोन: 040 24751344

प्रथम संस्करण : 2016

© : प्रधान संपादक

ISBN No. : 81- 89035- 71- 6
13 Digits : 9788189035716

मूल्य : 695.00

संयोजन एवं मुद्रण
नीरव टंडन सेल-098492 50784
श्री शिरडी साईं शिल्पी ग्राफ़िक्स, हैदराबाद।

Hindi Ka Jain Sahitya Evam Sahityakaar

Ek Anushelan

Thanks to

Prof. TLN Swamy Ji,
Principal,
Nizam College, Hyderabad

and

Sri Prasannchand Bhandari Ji,
Managing Trustee,
Mahaveer Hospital

Scanned with CamScanner

- मैं चोरी की वस्तु लेने, राजनिषिद्ध वस्तु का आयात-निर्यात करने, असली के बदले नकली माल बेचने मिलावट करने, कूट तोलमाप करने और रिश्वत लेने जैसे वंचनापूर्ण व्यवहारों से बचता रहूँगा।
- मैं परिग्रह के व्यक्तिगत स्वमित्व की सीमा करूँगा। भूमि घर, सोना, चाँदी, रत्न, धन-धन्य, पशु-पक्षी, धातु गृह सामग्री, यान-वाहन आदि एक सीमा से अधिक नहीं रखूंगा।
- मैं पदार्थों के भोग-उपभोग की सीमा करूंगा। उनका आवश्यकता से अधिक संग्रह नहीं करूंगा।
- शस्त्रों का निर्माण और विक्रय नहीं करूँगा।[२]

भगवान महावीर ने आचार संहिता में जिन संकल्पों की ओर इंगित किया है, वे आज भी उतने ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं जिसने उस समय में थे। उन्होंने *अहिंसा परमों धर्मः* कहकर समाज को अहिंसा का पाठ पढ़ाया। वे दुनिया को सत्य, अहिंसा जैसे खास उपदेशों के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश किए। अपने प्रवचनों से मनुष्यों का सही मार्ग-दर्शन किया। जैन साहित्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण के लिए नैतिक शिक्षा देता है। अवव्रत से उन्नत बनने के लिए सत्यपथ गमन, त्याग, परोपकार और तपस्या करनी पड़ती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी के जैन साहित्य का सामाजिक पक्ष प्रबल है। भले ही जैन साहित्य की रचना धार्मिक प्रचार की दृष्टि से की गई हो परन्तु यह सामाजिक रूप से भी उतना ही प्रभावशाली सिद्ध होता है। इसमें लगभग सभी सामाजिक विषय पाएं जाते हैं। यह विश्वसनीय और प्रतिष्ठित साहित्य है। समाज के निर्माण में इस का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि जैन साहित्य पर जन-साधारण की श्रद्धा आज भी यथावत बनी हुई है।

संदर्भ :

१. हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ, शिव कुमार शर्मा, पृ. २६
२. अहिंसा और शांति , युवाचार्य महाप्रज्ञ, पृ. १६५

डॉ. अफसर उन्निसाँ बेगम
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
मुमताज डिग्री एंड पी.जी. कॉलेज, मलकपेट, हैदराबाद।

Scanned with CamScanner